

भेजा गया है।

आशापूरवक सुभाषण का है। आशापूरवक सुभाषण का है। आशापूरवक सुभाषण का है। आशापूरवक सुभाषण का है। आशापूरवक सुभाषण का है।

केवल आर्थिक सम्पन्नता ही किसी व्यक्ति समाज राष्ट्र की खुशहाली का आधार नहीं हो सकती : सीईओ अखिलेश अर्गल

राज्य आनंद संस्थान के 5 दिवसीय ऑनलाइन अल्पविराम कार्यक्रम का शुभारंभ

दतिया/हमारे समाज में आनंद, उत्सव और मस्ती करने की अनगिनत परम्पराएं हैं, व्यवस्थाएं हैं। सामाजिक जीवन का आनंद उठाने की पूरी जीवन प्रणाली है। हमारे समाज में जितने पर्य, उत्सव और त्यौहार मौजूद हैं उतने शायद दुनिया की किसी सभ्यता, संस्कृति और समाज में नहीं है। फिर भी क्या कारण है हम खुश नहीं हैं। यह बात राज्य आनंद संस्थान के सीईओ श्री अखिलेश अर्गल ने 5 दिवसीय ऑनलाइन अल्पविराम कार्यक्रम के प्रथम दिवस के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में कही।

उन्होंने कहा कि पिछले 3 दशकों में हमारे देश ने बहुत आर्थिक प्रगति की।

फिनलैंड जैसा छोटा सा देश विश्व की हैपीनेस सूची में प्रथम स्थान पर है। हम विश्व की छठवीं अर्थव्यवस्था हैं फिर भी दुनिया के 156 देशों की हैपीनेस सूची में हम 139 वे पायदान पर हैं। अमेरिका जैसा शक्ति सम्पन्न समृद्ध देश भी 19 वे पायदान पर है। इससे सिद्ध होता है कि मूलभूत आवश्यकताओं सेटी कपड़ा और मकान को छोड़कर केवल आर्थिक संपन्नता किसी व्यक्ति समाज व राष्ट्र की खुशहाली का आधार नहीं हो सकती।

जिन छोटी-छोटी बातों पर हम जश्न मना सकते थे, हस सकते थे, खुश हो सकते थे, मनोविकारों की काली छांव में वे दिखते नहीं हैं। आज वही

खुशी को दूढ़ने के लिए अल्पविराम जैसे कार्यक्रम की जरूरत है। ताकि हम स्वयं आनन्दित रहकर दूसरों को भी आनन्दित कर सकें।

कार्यक्रम का शुभारंभ आनंदम सहयोगी मास्टर ट्रेनर श्रीमती सुनीता गांधा द्वारा गाया गया प्रेरणा गीत 'ये मालिक तेरे वंदे हम, ऐसे हों हमारे करम' के साथ किया गया। तदनुषरांत परिचय सत्र में उन्होंने सभी प्रतिभागियों का परिचय प्राप्त किया एवं उनकी अभिरुचियों को जाना एवं



आनंदम सहयोगी मास्टर ट्रेनर समीश नईम ने सहयोगी मास्टर ट्रेनर का परिचय कराया। साथ ही राज्य आनंद संस्थान द्वारा सन्वालित लोगों की खुशी प्राप्ति

हेतु विभिन्न कार्यक्रमों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। वही मास्टर ट्रेनर के के बुटोलिया ने वड़ी सुन्दर व्याख्या करके अल्पविराम, शांत समय क्या है, कौं विस्तार से बताया।

मास्टर ट्रेनर अंजना श्रीवास्तव द्वारा लिए गए प्रश्न सत्र 'मेरे लिए आनंद क्या है?' 'मेरा आनंद कैसे बढ़ता है?' 'मेरा आनंद कैसे घटता है?' शांत समय के दौरान महेंद्र शर्मा दतिया, मधु परिहार, अचल, साक्षी आदि प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के अंत में लगभग 4 वर्ष से मध्यप्रदेश में

वीलिटियर सेवाएं देने वाले द्वारा खंड निवासी मुकेश करुवा मास्टर ट्रेनर इनांसेंटिव ऑफ चेंज मुकेश करुवा भोपाल ने बड़ा बड़ा ही सुमधुर गीत 'देखो देखो यह बहारे ये चमन है सबका, देखो देखो ये फिजाये ये गगन है सबका' गाकर सभी प्रतिभागियों का मन मोह लिया।

अल्पविराम कार्यक्रम में मनोज द्विवेदी, महेंद्र शर्मा, सध्या पुरोहित, गजेंद्र चौहान, रामश्रुती, अक्षय, गौरव, अचल, जेपी आनंद, कौंलाश श्रीवास्तव, साक्षी अनुश्री, जगदीश मीणा, मधु परिहार, निधि, गोपेश बाजपेई, सुनील चोपड़ा, विनीता मेहता, आलोक दुबे, भावना कुलश्रेष्ठ, अतुल कार्य सहित 40 से अधिक आनंदकों ने सहभागिता की।